कोटि-कोटि धन्यवाद!

मैं विज्ञान प्रगति का 2007 से नियमित पाठक हूँ और मुझे इसका प्रत्येक अंक रोचक, अद्वितीय एवं ज्ञानवर्द्धक लगता है। मैं विज्ञान प्रगति को दिव्य ज्ञान की ज्योति मानता हूँ क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होने वाली नवीन जानकारियाँ विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रत्येक वर्ग एवं विषय के व्यक्तियों के लिए बहुपयोगी और ज्ञानवर्धक होती हैं। विज्ञान प्रगति का मई 2013 का पादप जगत पर आधारित विशेष अंक बेहद रोचक व नवीन जानकारियों से परिपूर्ण लगा। इस अंक में प्रकाशित विशेष लेख 'विचित्र एवं विशिष्ट पेड़-पौधे' के माध्यम से पृथ्वी पर पाये जाने वाले अनेक विचित्र पेड़-पौधों के बारे में अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई जो मुझे ज्ञात नहीं थी। इसके अलावा स्थायी स्तंभ 'सवाल जब जब, जवाब तब तब, ज्ञान कोष में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध हुआ।

अंत में विज्ञान प्रगति की समस्त टीम को इस महत्वपूर्ण अंक के प्रकाशन के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद।

श्री विमल वर्मा, मोहल्ला दुर्गा प्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर, जि.- पीलीभीत - 262 201 (उ.प्र.)
[ई-मेल : vimal20071992@gmail.com]

अनिवार्य पत्रिका

मई के प्रथम सप्ताह की तपतपाती गर्मी में विज्ञान प्रगति का हरा-भरा, रसीला और गर्वीला अंक पढ़कर बड़ा अच्छा लगा। तरबूज पर आधारित संपादकीय (अपनी बात) से पता चलता है कि यह कितना गुणकारी फल है। लेकिन मीडिया में बार-बार यह दिखाया जाता है कि कुछ लोभी-लालची किसानों एवं व्यापारियों ने इसके गूदे को अप्राकृतिक ढंग से लाल करने के लिए अनेक जहरीले रासायनिक पदार्थों का प्रयोग किया है जो कि भयावह सिद्ध भी हो सकता है। इस संदर्भ में कहना होगा कि इसे रोकने पर तुरंत ध्यान देना चाहिए तथा तरबूज उत्पादकों एवं विक्रेताओं की आकस्मिक जांच करनी चाहिए।

श्री सुधांशु जैन का लेख भारत का नाम पौधों के नाम पढ़कर पौधों के नामकरण के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कर गर्व का अनुभव हुआ। आयुर्वेद, जो कि पूर्णतः पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों पर आधारित चिकित्सा विज्ञान है, आज उसके मूल रूप को सुरक्षित रखते हुए उस पर शोध किया जाए तो और बहुत से अन्य गुणकारी पेड़-पौधों के बारे में जानकारी मिल सकती है।

वचा घास का चित्र देखकर मुझे हनुमानगढ़ जिले के कुछ क्षेत्रों में स्वतः ही उगने वाली घास का ध्यान हो आया। मुझे लगता है कि शायद यह वचा ही होगी। पर कभी इसकी उपयोगिता व प्रयोग की कोई जानकारी इस क्षेत्र में नहीं मिली। विज्ञान समाचार भी बहुत ज्ञानवर्द्धक लगे।

कीट भक्षी फफूंद वाला उज्ज्वल घोष का लेख तो रोंगटे खड़े कर देने वाला लगा। इस जानकारी से यह बात स्पष्ट होती है जैसे कि सृष्टि के आरम्भ में शायद सभी जीव वनस्पति से ही पैदा हुए हों। सवाल-जवाब में Hare तथा Rabbit के अन्तर की समस्या का हल कर दिया गया। इसी प्रकार पूर्व में Tortoise तथा Turtle भी दो अलग-अलग प्रजातियों के बारे में कच्छप पर आधारित विवरण दिया गया था।

कृपया एक अंक विज्ञान व अंधविश्वासों पर भी दें। साथ ही विज्ञान प्रगति को S.S.A. तथा R.M.S.A. जैसे कार्यक्रमों से स्कूलों को मिलने वाले पुस्तकालय कोश से खरीदी जाने वाली पत्रिकाओं की अनुशंसा सूची में अनिवार्य पत्रिका के रूप में सम्मिलित करवाएं

श्री रमेश जांगिड़, शिक्षक, ग्रा. व पो. - भिरानी, भादरा, हनुमानगढ़-335 503 (राज.) [मो. : 09660102139]

प्रशंसनीय पत्रिका

सबसे पहले हम उन व्यक्तियों को नमन करते हैं जिन्होंने विज्ञान प्रगति जैसी ज्ञान रूपी पत्रिका को जन्म दिया। इस पत्रिका में मई 2013 वाले अंक में सागर तल की प्राचीन घटनाओं के अभिलेख वैश्विक उष्णता पढ़ कर काफी दुख हुआ। इसके बढ़ने से मानव जाति ही नहीं अपितु हरेक जीव-जन्तु पर खतरा मड़राने लगा है। मैं तमाम पाठक गण, छात्र-छात्राओं एवं नौजवानों से अनुरोध करता हूँ कि विज्ञान प्रगति की प्रगति बनाए रखने के लिए अपने-अपने स्तर से निरन्तर प्रयास करते रहें।

श्री छोटे लाल पासवान, सुपुत्र श्री असेश्वर पासवान, ग्रा.-गोढिया, पो.-कुशोधर, भाया लहेरियासराय, जि.-दरभंगा (बिहार) [मो. : 09955841616]

आज भी पढ़ता हूँ!

मैं 1965 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। यह उस समय की बात है जब कि मैंने हाई स्कूल पास करके कॉलेज में प्री-साइंस में अपना नाम लिखवाया था और मैं सिवान आया था, उस समय यह पत्रिका रेलवे स्टॉल पर ही मिलती थी। मैं बहुत बेसब्री से हर माह पत्रिका का इंतजार करता और खरीदकर पढ़ता था। जहां तक याद है, उस समय इसकी कीमत मात्र 50 पैसे या एक रु. ही थी। विज्ञान में रुचि थी इसलिए पढ़ता भी था। मैं डाक विभाग में नौकरी (करीब 36 वर्ष दो महीने) कर नवम्बर 2008 में सेवानिवृत हो गया हूँ परन्तु अभी भी नियमित रूप से इस पत्रिका को खरीद कर पढ़ता हूँ। पर अब यह शहर में बहुत सी दुकानों पर मिल जाती है। पहले से इसमें बहुत ही सुधार

भरपूर सहयोग

अद्भुत, अलौकिक, अकल्पनीय रेड रिबन एक्सप्रेस को देखने व उसमें रखी सुझाव पुस्तिका में अपने विचार देने का मौका जनपद मुख्यालय बस्ती के रेलवे स्टेशन पर तीन दिन के ठहराव के साथ आयी रेड रिबन एक्सप्रेस के कार्यक्रम में मिला था। मार्च 2013 के अंक में 'एड्स के विरुद्ध एक ट्रेन रेड रिबन एक्सप्रेस' को विशेष लेख में समायोजित करके ऐसे लोगों को भी जानने का मौका दिया गया जो किसी कारण से इसमें सम्मिलित नहीं हो सके थे।

राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2012 को पढ़कर अच्छा लगा। बस्ती जनपद में बालक-बालिकाओं की तैयारी के क्रम में सलाह, सुझाव, मार्गदर्शन व प्रोजेक्ट प्रस्तुति के तौर-तरीकों के साथ ही इसमें जाने के लिए चार बच्चों का चयन मेरी ही अगुवाई में हुआ था। इससे विज्ञान के प्रति बाल-बालिकाओं में काफी जागरूकता आयी है। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता लाने का यह एक सशक्त माध्यम है।

मीठा व लाल तरबूज

छिलका हरा और गूदा लाल,
काला बीज करे कमाल,
रंग बदलता तरबूजा,
तरबूजे को देखा,
एक हाथ से उठे नहीं दो,
आजमा के देखा,
गांव शहर हर जगह सुलभ है,
छोटे-बड़े कई आकार,
छोटे टुकड़े कटकर बिकते हैं,
अभी भी ये सस्ते मिलते हैं
मीठापन इसका भाता है
गर्मी में राहत दे जाता है,
होते इसके विविध उपयोग,
किस नाम मिले कैसा संयोग,
अपनी बात बताकर संपादक जी ने,
दिया बहुत ही अच्छा ज्ञान,
आम आदमी अब तक था इससे,
बना हुआ अनजान,
विविध प्रजातियां होती विश्व में
सबके अपने-अपने नाम,
विज्ञान प्रगति ने इसे संजोकर,
बनाया रोचक और उपयोगी,
पाठक जो अपनायेंगे इसको,
निश्चित होंगे सदा नीरोगी,
डा. वी. के. वर्मा का दावा है,
जो इससे जुड़ जायेगा,
मंहगाई के दौर में आज भी
सस्ती से सस्ती कीमत पर,
सेहत स्वाद दोनों पायेगा
और स्वयं में खुश हो जाएगा।

डा. विजय कुमार वर्मा, जिलाध्यक्ष - रिसर्च सोसाइटी ऑफ होम्योपैथी (इंडिया) पटेल एस.एम. होमियो हॉस्पिटल, गोटवा, जनपद - बस्ती-272 001 (उ.प्र.) [मो. : 09415163328; 09559669921]

हुआ है और यह प्रतियोगियों के लिए बहुत उपयोगी बन पड़ी है। इसमें सभी लेख अच्छे तथा जानकारी देने वाले रहते हैं जो बहुत जरूरी तथा अच्छे लगते हैं। चित्रकथा से बच्चों को वैज्ञानिक बनने की प्रेरणा मिलेगी। विज्ञान प्रश्न, प्रतियोगियों के लिए, सवाल जब जब, जवाब तब तब वास्तव में जानकारी से भरपूर रहते हैं।

श्री कामता भक्त, से. नि. सहायक डाक निदेशक, सलेमपुर महादेवा, सिवान-841 226 (बिहार)

विज्ञान प्रगति का दीप

मैं विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक का बेसब्री से इंतजार करता रहता हूँ क्योंकि इसने मुझे विज्ञान के प्रति बहुत अधिक प्रेरित किया है। यह गागर में सागर भरने वाली पत्रिका है। मुझे मई 2013 के अंक की आमुख कथा 'भारत का नाम पौधों के नाम' अत्यन्त आकर्षक एवं ज्ञानपूर्ण लगी। विज्ञान प्रगति में 'विज्ञान समाचार' और 'सवाल जब-जब, जवाब तब-तब' स्तम्भ चार चांद लगाते हैं। विज्ञान प्रगति को सभी छात्र, अध्यापक, यहां तक कि व्यवसायी व किसान भी वरदान समझते हैं क्योंकि यह सभी वर्गों को विज्ञान से जोड़ती है। विज्ञान प्रगति हर बार नई-नई जानकारियाँ लेकर आती है तथा वर्तमान में घटी घटनाओं को बहुत उपयुक्त तरीके से निचोड़कर प्रस्तुत करती है। इस सराहनीय कार्य के लिए मैं विज्ञान प्रगति की टीम को धन्यवाद देता हूँ। इस पत्रिका के इस प्रकार के महत्वपूर्ण अंक ज्ञानवर्धक लेखों सहित प्रकाशित होते रहेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

लड़खड़ाने लग गया मैं, डगमगाने लग गया
देहरी का दीप तेरी याद आने लग गया,
थाम ले कोई किरण की बांह मुझको थाम ले
नाम ले कोई कहीं से रोशनी का नाम ले
कोई कह दे, दूर देखो टिमटिमाया
विज्ञान प्रगति का दीप एक
ओ अंधेरे के मुसाफिर उसके आगे घुटने टेक!

श्री कौशल पाल, सुपुत्र श्री आदेश कुमार, महाराज पुरम कालोनी, आंवला, बरेली-243 301 (उ.प्र.)
[मो. : 08859277254, 08273549458]

ज्ञान रूपी प्रकाश स्तम्भ

मैं बी. एससी. (कृषि) तृतीय वर्ष का छात्र हूँ और पिछले छः सालों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति के सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगते हैं। हमारे आस-पास के जीवों एवं वनस्पतियों के विषय में सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए विज्ञान प्रगति में दिये गये लेख एवं चित्र बहुत ही सहायक सिद्ध होते हैं। नई खोजों एवं अनुसंधानों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए विज्ञान प्रगति सबसे सरल एवं अच्छा माध्यम है। विभिन्न औषधीय महत्व के पादप जो हमारे आस-पास होते हैं परंतु अज्ञानता के कारण हम इनका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं, विज्ञान प्रगति में प्रकाशित होने वाले लेखों की सहायता से इनकी उपयोगिता की जानकारी प्राप्त होती है। चूंकि यह हमारी मातृ भाषा हिन्दी में प्रकाशित होती है, इसलिए सिर्फ विज्ञान वर्ग के छात्र ही नहीं, अन्य सभी व्यक्ति भी इसकी सहायता से अपने ज्ञान भण्डार में वृद्धि कर सकते हैं। इस प्रकार विज्ञान प्रगति एक ज्ञान रूपी प्रकाश स्तंभ की तरह बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों के व्यक्तियों को ज्ञान रूपी प्रकाश से प्रकाशित कर रही है। चित्रों की सहायता से लेखों को सरल एवं आकर्षित बनाने के लिए विज्ञान प्रगति के सम्पादक, कला अधिकारी एवं अन्य सहयोगियों को हम धन्यवाद देते हैं और ईश्वर से यह मंगल कामना करते हैं कि विज्ञान प्रगति निरन्तर इसी प्रकार हमारे ज्ञान में वृद्धि करती रहे।

श्री दीपक कुमार मण्डल, सुपुत्र श्री नन्द लाल मण्डल, ग्रा. व पो.- भुड़िया कालोनी, विकास खण्ड - बहेड़ी, जि.- बरेली 263148 (उ.प्र.)
[मो. : 09568383160, 08979246676
ई-मेल : mr.deepakkumar92@gmail.com]

ज्ञान का खजाना

मैं सिविल परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ और विगत दिसम्बर 2012 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका से विभिन्न प्रकार की नवीन जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह पत्रिका आई. ए.एस. परीक्षा के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि सिलेबस में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सेक्शन इस पत्रिका से कवर हो जाता है। मुझे अप्रैल 2013 का अंक अच्छा लगा। इसमें कहानी जीवन की बहुत अच्छी लगी। न्यूट्रीनों कण के बारे में पता चला और सी.एस.आई.आर. के बारे में रोचक जानकारी मिली। इस पत्रिका के संपादक, प्रकाशक एवं पूरी टीम को हृदय से धन्यवाद।

श्री लवकेश शर्मा, सुपुत्र श्री सुभाष शर्मा, ग्रा. + पो. चक महाराज का, जि. - गंगानगर-335001 (राज.)
[मो. : 07742218787; ई-मेल : love.koki23@gmail.com]

जानकारी से भरपूर

मैं गागर में सागर रूपी विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। जब मैं 11वीं कक्षा का छात्र था तो हमारे मित्र ओम प्रकाश जी ने विज्ञान प्रगति से मेरा परिचय कराया था। मई 2013 अंक 'पादप जगत पर विशेष' बहुत अच्छा लगा। इससे फलों के राजा आम सहित अन्य तमाम महत्वपूर्ण फलों व पौधों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

मैंने इस अंक की एक प्रति अपने करीबी प्रगतिशील किसान को भिजवाई है जिससे वे पत्रिका में दिये हुए तमाम लाभकारी फलों की वैज्ञानिक तरीके से खेती कर सकें। इस पत्रिका की जितनी तारीफ की जाय वह कम है।

श्री अमित कुमार दीक्षित, ग्रा. - गुलालपुर हैदरगढ़, बाराबंकी (उ.प्र.) [ई-मेल : dixit2787@gmail.com]

मेरे देश की धरती सोना उगले

विज्ञान प्रगति का मई 2013 का अंक अपने चिर-परिचित अनूठे अंदाज से ज्ञानवर्द्धक आलेखों के ज्ञान भण्डार के साथ मिला। पादप जगत पर केन्द्रित यह अंक बहुत से विचित्र एवं विशिष्ट पेड़-पौधों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर देने वाला रहा जो सामान्यतया नहीं मिल पातीं। 'सफलता की कहानी सघन बागवानी' का तो कहना ही क्या, जो लोग जानकारी के अभाव में व्यवस्थित खेती करके भरपूर लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं उनके लिए तो यह वरदान है। इसमें दी गयी सलाह और बतायी गयी युक्तियों के आधार पर अधिक मुनाफा कमाने का अवसर प्राप्त करने के साथ-साथ लोकप्रिय गीत के बोल 'मेरे देश की धरती सोना उगले... उगले हीरे मोती...' को सच बनाया जा सकता है क्योंकि जब कृषि के माध्यम से हमारे पास भरपूर सिक्के रहेंगे तो सोने-चांदी या हीरे-मोती हासिल करना अपने आप आसान हो जायेगा। आमुख कथा 'भारत का नाम पौधों के नाम' वास्तव में ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ संग्रहणीय भी है। इसके शानदार संयोजन के लिए संपादक मण्डल को कोटिशः बधाई! मेरा विनम्र आग्रह है कि देश में रसोई गैस की किल्लत है, हम विदेशों (गैस उत्पादक देशों) पर निर्भर हैं, पर्यावरण सुरक्षा बनाये रखने के लिए लकड़ियों की कटाई हो नहीं रही है, आज आवश्यकता है देश में सस्ते और सर्वसुलभ ईंधन की खोज की, ताकि लोगों को लाइनों में लगना और अनेकानेक समस्याओं का सामना न करना पड़े। यह जरूरी इसलिए भी है क्योंकि हम सब कुछ रहते हुए तब तक नहीं खा सकते हैं जब तक भोजन बनाने के लिए ईंधन न हो। ईंधन के नाम पर मची त्राहि-त्राहि और मारा-मारी से पूरा देश जूझ रहा है। आवश्यकता है आपकी पहल की।

श्री कृष्ण कुमार उपाध्याय, एडवोकेट, संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, रसोई गैस उपभोक्ता कल्याण समिति, 8/262, बैरिहवां, गांधी नगर, जनपद-बस्ती 272 001 (उ.प्र.)
[मो. : 09236578935; 09839987104]

ज्ञान का सागर

भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 साल पर केन्द्रित विज्ञान प्रगति का मार्च 2013 का अंक, जो यातायात पर विशेष के रूप में बाजार में आया, बेहद अच्छा लगा। मेरे बुक स्टॉल पर अनेकानेक प्रकाशनों की और विविध विधाओं की पत्र-पत्रिकाओं बिकती हैं, लेकिन विज्ञान प्रगति का पाठक-पाठिकाओं का वर्ग विशेष ही होता है। महीने के आखिरी सप्ताह से ही बच्चे विज्ञान प्रगति को तलाशना शुरू कर देते हैं, क्योंकि मांग के अनुपात में पत्रिका लगभग हर महीने कम पड़ जाती है। मुझे लगता है कि लोग इसका संकलन करके निरन्तरता बनाये रखने की कोशिश करते हैं जिसमें एक भी अंक कम होने का अर्थ पूर्णता में कमी हो जाना है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पत्रिका ने जब-जब अपने दाम बढ़ाये हैं तब-तब उसके साथ खूबियां भी बढ़ाई हैं, जिससे दाम बढ़ने के साथ ही प्रसार भी बढ़ जाता है। इसे संपादकीय चातुर्य ही कहा जायेगा जो किसी भी प्रकाशन समूह व बाजार से जुड़े कारोबार के लिए सबसे जरूरी होता है। पत्रिका के संपादक मण्डल के साथ ही अध्ययनशील पाठक-पाठिकाओं को सुनहरे भविष्य की शुभकामनाओं के साथ ही...

श्री अमित कुमार सिंह, अरविन्द बुक डिपो, रोडवेज के सामने, बस्ती जनपद मुख्यालय, बस्ती - 272 001 (उ.प्र.)
[मो. : 09450788216]

समय निकालें!

विज्ञान प्रगति ज्ञान-विज्ञान को बढ़ावा देने वाली अद्वितीय पत्रिका है, इसने न जाने विज्ञान जगत के कितने जिज्ञासुओं को लक्ष्य हासिल करने में मदद की है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता विषय-वस्तु की जानकारी का पूरी तरह से प्रामाणिक होना है। इसके प्रशंसकों की संख्या प्रकाशन की शुरुआत से अब तक बढ़ती ही जा रही है। इसमें पत्रिका के विद्वान संपादक मंडल का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रिका आकर्षक पृष्ठों पर मनोहारी सज्जा व रंग संयोजन से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यानी इसका

(शेषांश पृष्ठ 34 पर)

संस्था के सिक्योरिटी कोड को गैरकानूनी तरीके से तोड़ कर सिस्टम में मौजूद सूचना-जानकारी चुरा लेता है या कुछ समय के लिए उस पर सिर्फ नजर डाल लेता है अथवा जानबूझ कर उसमें परिवर्तन करता है। हैकर लोग शातिर कम्प्यूटर-ज्ञानी होते हैं जोकि उपरोक्त प्रकार के अवैध काम करते हैं। वैसे बता दें कि कुछ संस्थाएं या देश अन्य संस्थाओं या देशों की जासूसी के लिए भी इन हैकरों का इस्तेमाल करते हैं। पर कृपया आप ऐसा कभी न करें।

• **प्रश्न 16 :** यदि देश 'क' में आये भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमान पर 5 थी और देश 'ख' में आये भूकंप की तीव्रता इसी पैमाने पर 6 थी, तो बताइए कि इनकी शक्ति में कितना अंतर था?

• **उत्तर :** 'ख' देश वाला भूकंप 'क' देश के भूकंप से 10 गुना ज्यादा शक्तिशाली था। रिक्टर पैमानों पर इसी प्रकार 4 से 6 अंतर का अर्थ है शक्ति में 100 गुने का अंतर क्योंकि रिक्टर पैमाना log वैल्यू पर आधारित है।

और अब अंतिम प्रश्न में हँसी का जश्न....

मरीज (डॉक्टर से) : आपने मुझे ठीक कर दिया, इसके लिए धन्यवाद। परंतु कहना चाहता हूँ कि आपका बिल तो माउंट एवरेस्ट जितना ऊंचा है?

डॉक्टर : आप मेरे यहां उपचार के लिए पधारे, इसके लिए धन्यवाद। परंतु कहना चाहता हूँ कि जब आप मेरे क्लीनिक में लाये गये थे, उस समय आप का टोटल, पूरा, सम्पूर्ण तथा मुकम्मल शरीर माउंट एवरेस्ट जैसा ही ठंडा पड़ चुका था, समझे?

संपर्क सूत्र :
डॉ. देवकी नंदन, बी-707, प्रगति अपार्टमेंट्स, प्लॉट 5-सी, सेक्टर-11, द्वारका, नई दिल्ली-110075

(आपके पत्र : पृष्ठ 2 का शेषांश)

रंग-रूप और प्रस्तुति सभी कुछ अन्य पत्रिकाओं के बृहद संसार से इसको अलग बनाती है। मैं एमएससी मैथ. प्रथम वर्ष का छात्र हूँ, बीएससी में मेरे विषय फिज़िक्स, केमेस्ट्री और मैथ रहे, मैं पढ़ने के साथ-साथ अपने समकक्ष कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाने के साथ ही भविष्य का मार्गदर्शन भी करता हूँ जिसमें विज्ञान प्रगति के लगातार गंभीर अध्ययन का बहुत बड़ा योगदान है। मैं अध्ययनरत ऐसे छात्र/छात्राओं को जो वास्तव में नाम कमाने के साथ ही अच्छे भविष्य के सपने को साकार करने के प्रति गंभीर हैं, को सलाह देता हूँ कि वे विज्ञान प्रगति के नियमित अध्ययन के लिए समय निकालें, क्योंकि इससे उनकी प्रतिभा में निखार आयेगा।

श्री पौरुष उपाध्याय, 8/262, बैरिहवां, गांधी नगर, जनपद - बस्ती-272 001 (उ.प्र.) [मो. : 09044591099]

पसंदीदा अंक

मैं सिविल इंजीनियरिंग का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति के प्रत्येक अंक का गहन अध्ययन करता हूँ जिससे बहुत ही ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक बातों के बारे में जानकारी हासिल होती है। विज्ञान प्रगति एक ऐसी पत्रिका है जो समाज के हर वर्ग के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। मई 2013 'भारत का नाम पौधों के नाम' को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। पौधों की विभिन्न किस्मों एवं उनके वैज्ञानिक नामों के विषय में जानकारी मिली। 'सवाल जब-जब जवाब तब-तब' में शुतुर्मुर्ग के विषय में दी गयी जानकारी संकलन योग्य लगी। इसके अतिरिक्त हम सुझाएं आप बनाएं लेख के अन्तर्गत 'सुरक्षित बाथरूम स्विच' बनाने की जानकारी दी गयी जो बहुत ही रोचक थी।

मैं आशा करता हूँ कि इसी तरह विज्ञान प्रगति का आने वाला हर अंक रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहेगा। नये स्तंभों के नये कलेवर में विज्ञान प्रगति आज भी प्रासंगिक है। अब हमारी पीढ़ी इस विरासत को सहेजेगी, संवारेगी। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

श्री बृजेश कुमार, सुपुत्र श्री राधेश्याम, ग्रा. - नया गांव, पो. - चहोड़ा घाट, जि.- अम्बेडकर नगर - 224 181 (उ.प्र.) [मो. : 09984239008; ई-मेल : brijeshambedkarnagar@gmail.com]

जानकारी बहुत ही अच्छी लगी

मैं विज्ञान प्रगति पत्रिका का पिछले दस वर्षों से नियमित पाठक हूँ। सर्वप्रथम मैंने विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2003 का अंक (एक सफरनामा देश के अभयारण्यों का) पढ़ा था। इस अंक को पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा और विज्ञान प्रगति मेरी पंसदीदा पत्रिका बन गई। अब मैंने अप्रैल 2013 का अंक पढ़ा जिसकी आमुख कथा 'डबल हेलिक्स डी.एन.ए. की खोज के साठ वर्ष' को पढ़कर बहुत अच्छा लगा क्योंकि इसमें डीएनए मॉडल को बहुत आसानी से समझाया गया है। मई 2013 का अंक बहुत ही पसंद आया। इसकी आमुख कथा बहुत ही अच्छी थी। इससे पता चला है कि कैसे एक पौधे का नामकरण किया जाता है। विशिष्ट एवं विचित्र पौधे, उत्तराखण्ड, फल वृक्ष संरक्षण एवं उपयोगिता की जानकारी बहुत ही अच्छी लगी।

विज्ञान प्रगति के स्तंभ सवाल जब-जब जवाब तब-तब, विज्ञान प्रश्न व वर्ग पहेली ज्ञान के सागर होते हैं। इसी अंक में छपी एक दीवाने रूसी वैज्ञानिक की अजीब मंगल कामना दिल को छू गई। मैं यही कहूंगा कि विज्ञान प्रगति एक ज्ञानवर्धक पत्रिका है जो हमारे ज्ञान में चार चांद लगाती है। विज्ञान प्रगति का यह विज्ञान जगत क्रम निरन्तर इसी तरह चलता रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

श्री सुषैन बाबू, सुपुत्र श्री जयनन्द शर्मा, ग्रा.- इस्माईलपुर, पो.- शिवाला कलां, जि.- बिजनौर - 246 734 (उ.प्र.) [मो. : 07830596456; 08126451251]

एकमात्र अनूठी बेजोड़ पत्रिका

कहा जाता है कि विज्ञान मानव मस्तिष्क के विचारों व सोच को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित कर देता है। हमने तो इसका वास्तविक व प्रत्यक्ष अनुभव तब किया जब हमारे हाथ विज्ञान का अमूल्य खजाना हाथ लगा। इस पत्रिका का अध्ययन पहले हम जिला पुस्तकालय में करते थे लेकिन बच्चों के समान जिज्ञासु व संग्रह करने की प्रवृत्ति होने के कारण इसे खरीद कर अपने संग्रह में शामिल करने का जुनून सा हो गया है। कला का विद्यार्थी होने के बावजूद पर मेरे अन्दर विज्ञान के प्रति जो लगाव है, वह सब केवल एकमात्र अनूठी बेजोड़ पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' का ही परिणाम है।

फरवरी अंक में 'जीवाश्म विज्ञान' के बारे में प्रकाशित आलेख ने तो मेरी 20 वर्ष पुरानी जिज्ञासाओं को काफी हद तक शांत कर दिया। भूगोल का विद्यार्थी रहा हूँ तो जीवाश्म विज्ञान पर यह आलेख मेरे लिए तो सोने पे सुहागा सिद्ध हुआ। डार्विन महोदय पर आलेख रुचिकर था। प्रदीप कुमार मुखर्जी का आलेख ' विज्ञान प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण' ने तो हमारे विचारों को एक नवीन ऊर्जा प्रदान की है। गॉड पार्टिकल पर पहले भी लेख छपे थे, इस बार एक और लेख ने हमारे ज्ञान के खजाने में एक और नूर जोड़ दिया है।

आपकी नई पहल विज्ञान गीत व कविताएं बड़ी अच्छी लगीं। वहीं आपके साथ वर्ष 2012 में अंतरिक्ष विज्ञान व अंतरिक्ष उड़ान में खोजों को पढ़कर तो लग रहा था कि सुनीता विलियम्स व ल्यू वैंग के साथ हम भी स्पेस शटल में घूम रहे हैं।

स्थाई स्तंभ सवाल-जवाब, विज्ञान प्रश्न, क्रियात्मक विज्ञान और सी. वी. रमन पर प्रस्तुत चित्रकथा ने तो इस सुनहरी विज्ञान परी की शान में चार चांद लगा दिए। वर्तमान में शिक्षक पद पर कार्यरत हूँ और मैं हमेशा अपने छात्रों को इस पत्रिका को पढ़ने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता रहा हूँ। अब तो आलम यह है कि कुछ जिज्ञासु छात्र तो एक ही माह में पत्रिका के नए अंक के बारे में दो बार पूछ लेते हैं। उनको बताना पड़ता है कि माह में तो एक ही बार इसका प्रकाशन होता है।

आशा है आगामी अंकों में आप भारतीय वैज्ञानिकों के जीवनवृत्त, 100वीं विज्ञान कांग्रेस पर खोजपरक जानकारी, विश्व के महान वैज्ञानिकों के प्रेरणास्पद संघर्ष की कहानी, कलाम साहब पर कोई अनूठा व संग्रहणीय अंक प्रकाशित करेंगे। अंत में एक बार फिर आप सबको प्रणाम। 'मैं तो अकेला ही चला था लोग मिलते गए और कारवां बनता गया.....'

श्री जितेन्द्र सिंह (PRT) द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सिलोर, ग्रा व पो. - सिलोर, तह. - सिवाना, जिला बाड़मेर (राज.) [मो. : 09414517664]